यूकॉस्ट एवं दिव्य हिमगिरि ने मनाया अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस

दिव्य हिमगिरि

हिमालयी राज्यों की पहली साप्ताहिक पत्रिका

नज़र सब पर

15th ANNIVERSARY

वर्ष 15 | अंक 42 | मूल्य 05 रुपये | 08-14 मार्च, 2026

चारधाम यात्रा के लिए ऑनलाइन पंजीकरण शुरू

टिहरी लेक फेस्टिवल का भव्य आगाज

उत्तराखंड में बदली आर्थिक तस्वीर

आय बढ़ी, गरीबी घटी

EXPERIENCE HELI TOUR WITH

Himgiri
Aviation & Tourism
SINCE 2018

A Unit of
दिव्य हिमगिरि

5N/6D TOUR

चारधाम यात्रा

BY HELICOPTOR

OPENING DATES

Yamnotri	Gangotri	Kedarnath	Badrinath
19 April, 2026	19 April, 2026	22 April, 2026	23 April, 2026

ADVANCE BOOKING STARTS

BOOK NOW

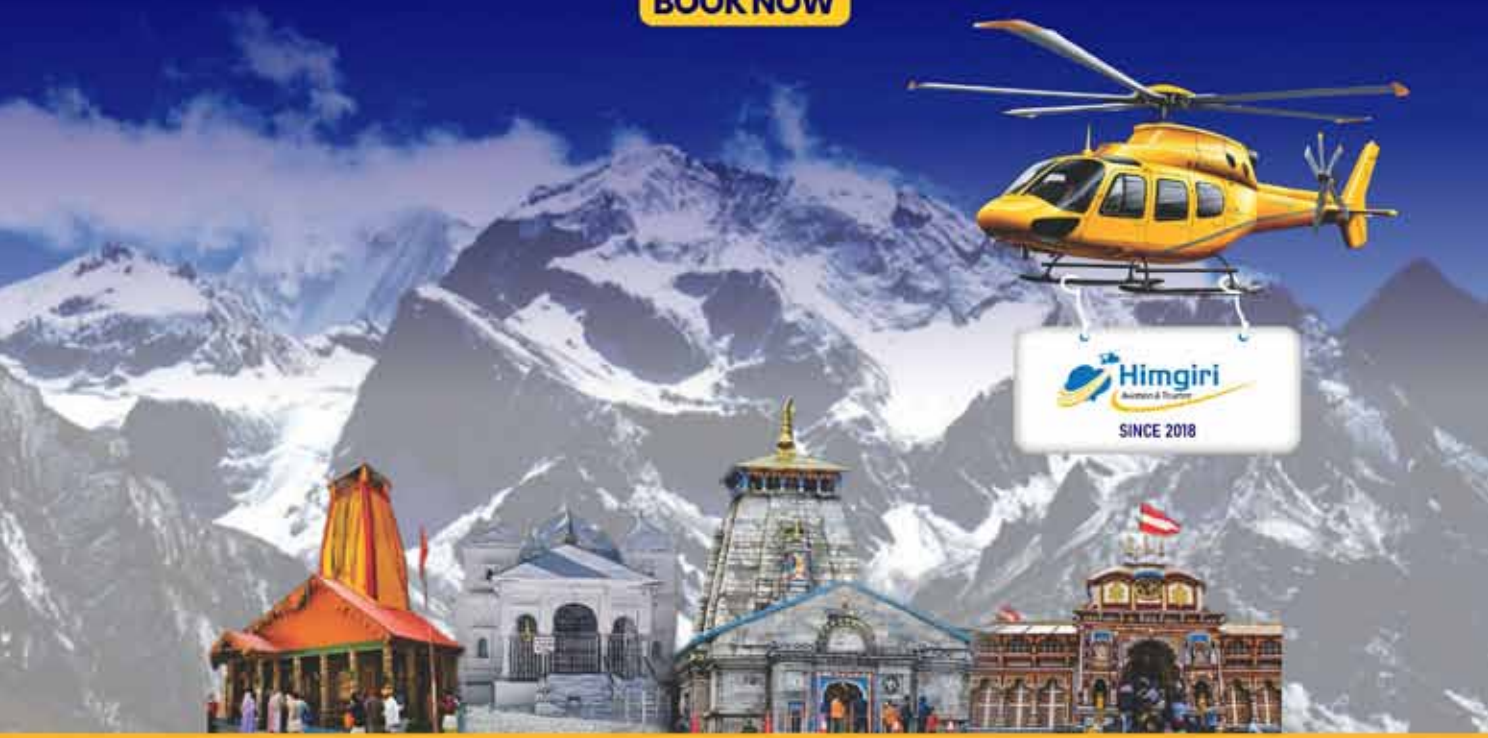

Contact for Reservation 8433456398, 9410353164

Email: himgiritourism@gmail.com

6 Municipal Road, Opp. Oxford School of Excellence, Dalanwala, Dehradun-248001 (UK)

दिव्य हिमगिरि

08-14 मार्च, 2026

संपादक
डॉ. कुँवर राज अस्थाना

वरिष्ठ संवाददाता
शंभूनाथ गौतम

संवाददाता
पूनम आर्या

विज्ञापन
सुनील सेमवाल

ग्राफिक डिजायनर
देव भट्ट

संवाददाता
हरिद्वार: डॉ. रजनीश गौतम
पौडी: रत्नमणि भट्ट
कोटद्वार: के.पी. बौंठियाल
रूद्रपुर: हेमचन्द्र बुडलाकोटी
चमोली: मुकेश रावत
रुड़की: श्रीगोपाल नारसन
नैनीताल: शीतल तिवारी
अल्मोड़ा: संजय कुमार अग्रवाल (एड.)
विकासनगर: अजय शर्मा
प्रसार: रमेश सिंह रावत

संपादकीय कार्यालय : 6, म्युनिसिपल रोड, बाला हिसार स्कूल के सामने, डालनवाला देहरादून (उत्तराखंड)
मोबाइल : +91 8433456398, 9410353164
Email: divyahimgiriddn@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं मुद्रक कुँवर बहादुर अस्थाना द्वारा आईशा प्रिंटिंग प्रेस, 292/1, चुक्खूवाला, ओंकार रोड, देहरादून-248001 उत्तराखण्ड से प्रकाशित।
संपादक: कुँवर बहादुर अस्थाना*

*(पीआरबी एक्ट के तहत प्रकाशित सामग्री के लिए उत्तरदायी)

महिला सशक्तिकरण की दिशा में बढ़ते कदम

हर वर्ष 8 मार्च को अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस मनाया जाता है। यह केवल महिलाओं के सम्मान और उनकी उपलब्धियों का उत्सव भर नहीं है, बल्कि समाज में उनकी स्थिति, अधिकारों और सामने मौजूद चुनौतियों पर गंभीरता से विचार करने का अवसर भी है। आधुनिक युग में विज्ञान, तकनीक, राजनीति, शिक्षा और अर्थव्यवस्था जैसे लगभग हर क्षेत्र में महिलाओं ने अपनी प्रतिभा और क्षमता का प्रभावी परिचय दिया है। इसके बावजूद आज भी समान अवसर और सम्मान की दिशा में उनका संघर्ष पूरी तरह समाप्त नहीं हुआ है। भारतीय समाज में महिलाओं की भूमिका ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण रही है। रानी लक्ष्मीबाई, सरोजिनी नायडू और इंदिरा गांधी जैसी हस्तियों ने यह सिद्ध किया कि अवसर मिलने पर महिलाएँ किसी भी क्षेत्र में नेतृत्व कर सकती हैं। आज भी विज्ञान, प्रशासन, सेना, खेल और व्यापार के क्षेत्र में भारतीय महिलाएँ उल्लेखनीय उपलब्धियाँ हासिल कर रही हैं। विशेष रूप से अंतरिक्ष और विज्ञान के क्षेत्र में महिला वैज्ञानिकों की सक्रिय भूमिका इस परिवर्तन की स्पष्ट झलक देती है। हाल के वर्षों में महिलाओं के सशक्तिकरण को लेकर कई सकारात्मक कदम भी उठाए गए हैं। शिक्षा के क्षेत्र में बेटियों की भागीदारी बढ़ी है और विभिन्न सरकारी योजनाओं ने समाज में जागरूकता पैदा की है। इसके साथ ही संसद में महिला आरक्षण विधेयक का पारित होना भारतीय लोकतंत्र के लिए एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर माना जा रहा है, जिससे नीति निर्माण में महिलाओं की भागीदारी बढ़ने की उम्मीद है। फिर भी कई चुनौतियाँ अभी भी सामने हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में स्थिति और अधिक चुनौतीपूर्ण है। कई जगहों पर आज भी लड़कियों की शिक्षा को उतना महत्व नहीं दिया जाता जितना लड़कों की शिक्षा को दिया जाता है। कम उम्र में विवाह, स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी और सामाजिक परंपराएँ महिलाओं के विकास में बाधा बनती हैं। इसलिए महिला सशक्तिकरण के लिए केवल शहरी क्षेत्रों में ही नहीं, बल्कि ग्रामीण समाज में भी व्यापक जागरूकता की आवश्यकता है। महिलाओं के खिलाफ हिंसा, कार्यस्थल पर भेदभाव और असमान वेतन जैसी समस्याएँ आज भी समाज के सामने गंभीर प्रश्न खड़े करती हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा, स्वास्थ्य और सामाजिक परंपराओं से जुड़ी बाधाएँ महिलाओं के विकास को प्रभावित करती हैं। स्पष्ट है कि महिला सशक्तिकरण केवल कानून या योजनाओं से संभव नहीं है, बल्कि इसके लिए सामाजिक सोच में भी परिवर्तन आवश्यक है। जब महिलाओं को शिक्षा, सुरक्षा और अवसरों में समान भागीदारी मिलेगी, तभी एक सशक्त समाज और प्रगतिशील राष्ट्र का निर्माण संभव होगा। अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस हमें इसी दिशा में निरंतर प्रयास करने की प्रेरणा देता है।

डॉ. कुँवर राज अस्थाना

चारधाम यात्रा के लिए ऑनलाइन पंजीकरण शुरू

हिमालय की गोद में बसे उत्तराखंड के चार पवित्र धाम बद्रीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री और यमुनोत्री की यात्रा हर सनातन श्रद्धालु के जीवन का एक बड़ा आध्यात्मिक स्वप्न मानी जाती है। बर्फीली चोटियों, पवित्र नदियों और आस्था की अनंत धारा के बीच होने वाली यह यात्रा केवल तीर्थ नहीं, बल्कि आत्मा के शुद्धिकरण और श्रद्धा के चरम का अनुभव भी है। इस दिव्य यात्रा की तैयारी अब औपचारिक रूप से शुरू हो गई है। चारधाम यात्रा 2026 के लिए ऑनलाइन पंजीकरण शुक्रवार, 6 मार्च को सुबह 7 बजे से शुरू कर दिया गया है, जिसके साथ ही देश-विदेश के लाखों श्रद्धालुओं के लिए बाबा केदार, बद्रीविशाल, मां गंगा और मां यमुना के दर्शन का मार्ग खुलने लगा है। इस वर्ष यात्रा की शुरुआत 19 अप्रैल को अक्षय तृतीया के शुभ पर्व पर गंगोत्री और यमुनोत्री धाम के कपाट खुलने के साथ होगी, जबकि 22 अप्रैल को केदारनाथ और 23 अप्रैल को बद्रीनाथ धाम श्रद्धालुओं के लिए खुलेंगे। श्रद्धालुओं को यात्रा पर आने से पहले ऑनलाइन पंजीकरण अनिवार्य रूप से कराना होगा, ताकि यात्रा को सुरक्षित, सुव्यवस्थित और सुचारु बनाया जा सके। दिव्य हिमगिरि रिपोर्ट।

हिमालय की शांत, बर्फ से ढकी चोटियों के बीच बसे उत्तराखंड के चार पवित्र धाम बद्रीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री और यमुनोत्री सदियों से करोड़ों श्रद्धालुओं की आस्था के केंद्र रहे हैं। इन धामों की यात्रा केवल एक धार्मिक परंपरा नहीं, बल्कि विश्वास, तप और आत्मिक शांति की ऐसी साधना है जो हर वर्ष लाखों लोगों को हिमालय की ओर खींच लाती है। कठिन रास्तों, ऊंचाई और मौसम की चुनौतियों के बावजूद श्रद्धालुओं का उत्साह कभी कम नहीं होता। यही वजह है कि चारधाम यात्रा को सनातन आस्था का सबसे बड़ा तीर्थ मार्ग माना जाता है। अब वर्ष 2026 की इस पवित्र यात्रा की तैयारियां औपचारिक रूप से शुरू हो गई हैं। राज्य सरकार ने चारधाम यात्रा के लिए ऑनलाइन पंजीकरण प्रक्रिया शुरू कर दी है, जिसके साथ ही देश-विदेश के लाखों श्रद्धालुओं के लिए यात्रा की राह खुलने लगी है। राज्य सरकार के अनुसार चारधाम यात्रा 2026 के लिए ऑनलाइन पंजीकरण शुक्रवार 6 मार्च से शुरू कर दिया गया है। सुबह से ही बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने वेबसाइट और मोबाइल ऐप के माध्यम से अपना पंजीकरण कराना शुरू कर दिया। पहले ही दिन हजारों लोगों ने यात्रा के लिए आवेदन कर दिया, जिससे साफ है कि इस बार भी यात्रा को लेकर श्रद्धालुओं में जबरदस्त उत्साह है।

सरकार का कहना है कि यात्रा को सुरक्षित, व्यवस्थित और भीड़ प्रबंधन के लिहाज से सुचारु बनाने के लिए पंजीकरण अनिवार्य किया गया है। चारधाम यात्रा की शुरुआत हर वर्ष अक्षय तृतीया के शुभ अवसर पर होती है। इस बार भी यात्रा की शुरुआत अप्रैल महीने में होने जा रही है। सबसे पहले गंगोत्री और यमुनोत्री धाम के कपाट अक्षय तृतीया के दिन श्रद्धालुओं के लिए खोले जाएंगे। इसके बाद केदारनाथ और बद्रीनाथ धाम के कपाट क्रमशः निर्धारित तिथियों पर खुलेंगे। जैसे ही कपाट खुलते हैं, पूरे उत्तराखंड में आस्था का एक विशाल उत्सव शुरू हो जाता है। हजारों किलोमीटर दूर-दूर से श्रद्धालु इन

धामों तक पहुंचते हैं और भगवान के दर्शन कर अपने जीवन को धन्य मानते हैं। चारधाम यात्रा का धार्मिक महत्व अत्यंत गहरा है। यमुनोत्री को मां यमुना का उद्गम स्थल माना जाता है, जहां श्रद्धालु मां यमुना के दर्शन कर जीवन में सुख-समृद्धि की कामना करते हैं। गंगोत्री वह स्थान है जहां से पवित्र गंगा का प्रवाह शुरू होता है और इसे पापों से मुक्ति का प्रतीक माना जाता है। केदारनाथ भगवान शिव के बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक है और हिमालय की ऊंचाइयों पर स्थित यह मंदिर श्रद्धालुओं के लिए तप और भक्ति का प्रतीक माना जाता है। बद्रीनाथ धाम भगवान विष्णु को समर्पित है और इसे वैष्णव परंपरा का सबसे महत्वपूर्ण तीर्थ माना जाता है। इन चारों धामों की यात्रा को मिलाकर ही चारधाम यात्रा कहा जाता है और मान्यता है कि इस यात्रा से व्यक्ति को आध्यात्मिक शांति और मोक्ष की प्राप्ति होती है। उत्तराखंड सरकार और पर्यटन विभाग हर वर्ष यात्रा को सफल बनाने के लिए व्यापक तैयारियां करते हैं। सड़कों की मरम्मत, सुरक्षा व्यवस्था, स्वास्थ्य सुविधाएं और आवास व्यवस्था को मजबूत किया जाता है ताकि श्रद्धालुओं को किसी प्रकार की परेशानी न हो। पिछले कुछ वर्षों में सरकार ने डिजिटल व्यवस्थाओं पर विशेष जोर दिया है। इसी कड़ी में ऑनलाइन पंजीकरण की व्यवस्था को और बेहतर बनाया गया है ताकि श्रद्धालु घर बैठे आसानी से अपना रजिस्ट्रेशन कर सकें और यात्रा के दौरान भीड़ को नियंत्रित किया जा सके। ऑनलाइन पंजीकरण की सुविधा शुरू होने से श्रद्धालुओं को काफी राहत मिली है। अब उन्हें लंबी लाइनों में खड़े होने या काउंटर पर जाकर पंजीकरण कराने की जरूरत नहीं पड़ती। वेबसाइट और मोबाइल ऐप के जरिए कुछ ही मिनटों में रजिस्ट्रेशन की प्रक्रिया पूरी हो जाती है। पंजीकरण के दौरान श्रद्धालुओं को अपनी व्यक्तिगत जानकारी, यात्रा की तिथि और पहचान से जुड़े दस्तावेज देने होते हैं। इसके बाद उन्हें एक पंजीकरण संख्या और क्यूआर कोड जारी किया जाता है, जिसे यात्रा के दौरान दिखाना अनिवार्य होता है। श्रद्धालु उत्तराखंड सरकार की वेबसाइट registrationandtouristcare-uk-gov-in पर जाकर रजिस्ट्रेशन कर सकते हैं। इसके लिए पहले वेबसाइट पर अकाउंट बनाना होता है। इसके बाद यात्रा की तारीख, धाम और यात्रियों की जानकारी भरनी होती है। प्रक्रिया पूरी होने के बाद रजिस्ट्रेशन स्लिप डाउनलोड की जा सकती है। यात्री Tourist Care Uttarakhand मोबाइल ऐप डाउनलोड करके भी रजिस्ट्रेशन कर सकते हैं। ऐप में अकाउंट बनाने के बाद यात्रा से जुड़ी जानकारी भरनी होती है और वहीं से यात्रा पास डाउनलोड किया जा सकता है। प्रदेश सरकार ने वॉट्सएप के जरिए भी रजिस्ट्रेशन की सुविधा दी है। इसके लिए 8394833833 नंबर पर "Yatra" लिखकर मैसेज भेजना होता है। इसके बाद चैटबॉट यात्रियों से जरूरी जानकारी पूछता है और उसी के आधार पर रजिस्ट्रेशन पूरा हो जाता है। धामी सरकार का कहना है कि चारधाम यात्रा के दौरान हर वर्ष लाखों श्रद्धालु आते हैं और ऐसे में भीड़ को व्यवस्थित रखना बहुत जरूरी होता है। पंजीकरण की व्यवस्था से न केवल श्रद्धालुओं की संख्या का अनुमान लगाया जा सकता है बल्कि सुरक्षा और आपदा प्रबंधन के लिए भी बेहतर योजना बनाई जा सकती है। पिछले वर्षों में आई प्राकृतिक आपदाओं के अनुभव को देखते हुए सरकार अब यात्रा को पूरी तरह व्यवस्थित और सुरक्षित बनाने की दिशा में काम कर रही है। चारधाम यात्रा उत्तराखंड की अर्थव्यवस्था के लिए भी बेहद महत्वपूर्ण है। यात्रा के दौरान लाखों श्रद्धालुओं के आने से स्थानीय व्यापार, होटल व्यवसाय, परिवहन और छोटे-छोटे दुकानदारों को रोजगार मिलता है। पहाड़ों में रहने वाले हजारों परिवारों की आजीविका इस यात्रा से जुड़ी हुई है। इसलिए हर वर्ष यात्रा शुरू होने के साथ ही पूरे प्रदेश में आर्थिक गतिविधियां तेज हो जाती हैं। स्थानीय लोग भी यात्रा के सफल संचालन के लिए उत्साह के साथ तैयारियां करते हैं। श्रद्धालुओं के लिए यह यात्रा केवल एक धार्मिक कार्यक्रम नहीं बल्कि एक भावनात्मक अनुभव भी होती है।

चारधाम यात्रा को सफल बनाने के लिए धामी सरकार ने व्यापक स्तर पर शुरू की तैयारियां

चारधाम यात्रा 2026 को सफल बनाने के लिए राज्य सरकार ने व्यापक स्तर पर तैयारियां शुरू कर दी हैं। प्रशासन, पुलिस, पर्यटन विभाग और स्वास्थ्य विभाग मिलकर यात्रा मार्गों पर व्यवस्थाओं को मजबूत करने में जुटे हुए हैं। सड़कों की मरम्मत का काम तेजी से किया जा रहा है ताकि श्रद्धालुओं को यात्रा के दौरान किसी तरह की दिक्कत न हो। इसके अलावा संवेदनशील स्थानों पर सुरक्षा व्यवस्था भी कड़ी की जा रही है। धामी सरकार ने यात्रा मार्गों पर स्वास्थ्य सुविधाओं को बेहतर बनाने पर भी जोर दिया है। ऊंचाई वाले क्षेत्रों में अक्सर श्रद्धालुओं को सांस लेने में दिक्कत या अन्य स्वास्थ्य समस्याएं हो सकती हैं। इसे ध्यान में रखते हुए मेडिकल टीम, एंबुलेंस और हेलीकॉप्टर सेवाओं को तैयार रखा जा रहा है। कई स्थानों पर अस्थायी अस्पताल और स्वास्थ्य केंद्र भी स्थापित किए जाएंगे ताकि जरूरत पड़ने पर तुरंत उपचार मिल सके। भीड़ प्रबंधन के लिए भी इस बार विशेष रणनीति बनाई गई है। पंजीकरण के आधार पर प्रतिदिन आने वाले श्रद्धालुओं की संख्या का अनुमान लगाया जाएगा और उसी के अनुसार व्यवस्थाएं की जाएंगी। यात्रा मार्गों पर निगरानी के लिए सीसीटीवी कैमरे लगाए जा रहे हैं और पुलिस बल की तैनाती भी बढ़ाई जा रही है। प्रशासन का कहना है कि श्रद्धालुओं की सुरक्षा सर्वोच्च प्राथमिकता है।

पर्यटन विभाग के अनुसार चारधाम यात्रा के दौरान इस बार भी बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं के आने की संभावना है। पिछले वर्षों में यात्रा में रिकॉर्ड संख्या में लोग पहुंचे थे और इस बार भी उत्साह देखने को मिल रहा है। ऑनलाइन पंजीकरण शुरू होते ही बड़ी संख्या में लोगों ने आवेदन करना शुरू कर दिया है, जिससे यह स्पष्ट है कि इस वर्ष भी यात्रा ऐतिहासिक हो सकती है। राज्य सरकार पर्यावरण संरक्षण को ध्यान में रखते हुए भी कई कदम उठा रही है। हिमालय का यह क्षेत्र बेहद संवेदनशील माना जाता है, इसलिए यात्रा के दौरान स्वच्छता और कचरा प्रबंधन पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। प्रशासन ने श्रद्धालुओं से भी अपील की है कि वे यात्रा के दौरान पर्यावरण का ध्यान रखें और पवित्र धामों की स्वच्छता बनाए रखने में सहयोग करें। चारधाम यात्रा केवल उत्तराखंड ही नहीं बल्कि पूरे देश की आस्था से जुड़ी हुई है। हर वर्ष इस यात्रा के माध्यम से लाखों लोग हिमालय की पवित्रता और आध्यात्मिक ऊर्जा का अनुभव करते हैं। जब मंदिरों के कपाट खुलते हैं और घंटियों की ध्वनि हिमालय की वादियों में गूंजती है, तो ऐसा लगता है मानो पूरा वातावरण भक्ति और श्रद्धा से भर गया हो। यही कारण है कि चारधाम यात्रा को केवल एक धार्मिक आयोजन नहीं बल्कि आस्था का महापर्व कहा जाता है। इस महापर्व की शुरुआत के साथ ही देश के कोने-कोने से श्रद्धालु भगवान के दर्शन के लिए निकल पड़ते हैं। अब जबकि ऑनलाइन पंजीकरण शुरू हो चुका है, लाखों श्रद्धालु इस पवित्र यात्रा के लिए अपनी तैयारियों में जुट गए हैं। आने वाले दिनों में जैसे-जैसे कपाट खुलने की तिथि नजदीक आएगी, वैसे-वैसे उत्तराखंड की वादियों में आस्था का यह विशाल कारवां और तेजी से आगे बढ़ता दिखाई देगा।

घुटनों में लगने वाली चोट: कारण, उपचार और सावधानियाँ

डॉ. आदित्य कीर्ति मोंगिया
(एमबीबीएस, डीआर्थो)
एसोसिएट डायरेक्टर, शिव चिकित्सालय देहरादून

घुटना हमारे शरीर का एक महत्वपूर्ण अंग हैं, इसमें अगर कोई चोट इत्यादि लग जाती है तो हमारी सारी दिनचर्या अयस्त-व्यस्त हो जाती हैं। जिस तरह हम अपने शरीर के बाकी अंगों का ध्यान रखते हैं ठीक उसी प्रकार हमें हमारे घुटनों का भी ध्यान रखना चाहिए। घुटनों में किस तरह की चोटे लगती हैं, उनके क्या लक्षण होते हैं और उनका क्या ईलाज होता हैं तथा क्या-क्या सावधानियां बरतनी चाहिए, इस बारे में बता रहे हैं शिव चिकित्सालय के एसोसिएट डायरेक्टर डॉ आदित्य मोंगिया।

घुटना हमारे शरीर का एक अत्यंत महत्वपूर्ण जोड़ है। घुटने के अंदर कुल 6 लिगामेंट (Ligament) होते है जिन्हें हिंदी में रज्जु/बंधान कहा जाता है। ये लिगामेंट घुटने को स्थिरता प्रदान करते है। किसी दुर्घटना, खेल गतिविधि या अचनाक मुडने से ये लिगामेंट खिंच सकते है, आंशिक रूप से फट सकते है या पूरी तरह टूट भी सकते है।

चोट लगने पर क्या लक्षण दिखाई देते है?

घुटने में सूजन आना
चलने में तकलीफ होना
पैर पर वजन डालने पर तेज दर्द
घुटने में स्थिरता महसूस होना
कुछ मामलों में बिना ऑपरेशन के भी ईलाज संभव है लेकिन जब लिगामेंट पूरी तरह फट जाते है (Complete Tear), तब सर्जरी आवश्यक हो जाती है।

जांच और उपचार: चोट की गंभीरता जानने के लिए सबसे पहले एमआरआई (MRI) जांच कराई जाती है जिससे यह पता चलता है कि कौन सा लिगामेंट प्रभावित है और उपचार किस प्रकार किया जायेगा?
आजकल घुटने की सर्जरी आर्थ्रोस्कोपी (दूरबीन विधि) से की जाती है। इस प्रक्रिया में घुटने पर बडा चीरा नहीं लगाया जाता बल्कि छोटे-छोटे छिद्रों के माधयम से अंदर जाकर उपचार किया जाता है। क्षतिग्रस्त लिगामेंट की रिपेयर की जाती है। घुटने के अंदर की गददी (मेनिस्कस) की भी मरम्मत की जाती है। यदि मुख्य लिगामेंट जैसे ACL (Anterior Cruciate Ligament) या PCL (Posterior Cruciate Ligament) पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो तो उनका रिकंस्ट्रक्शन (ACL Reconstruction) किया जाता है।

किन लोगों में अधिाक पाई जाती है यह चोट?

फुटबॉल, क्रिकेट, बास्केटबॉल जैसे खेल खेलने वाले खिलाडियों में यह चोट अधिक देखी जाती है। हालांकि सामान्य लोगों में भी सीढ़ियों से फिसलने, अचानक मुड़ने या गिरने से घुटने की चोट हो सकती है।

आधुनिक उपचार के लाभ:

पहले इस प्रकार की चोट में सर्जरी कम की जाती थी जिससे आगे चलकर घुटनों में घिसावट (आर्थराइटिस) की समस्या हो जाती थी लेकिन अब समय पर ऑपरेशन करने से भविष्य में होने वाली जटिलताओं से बचा जा सकता है।

दूरबीन विधि से किये गये ऑपरेशन में-

बडा चीरा नहीं लगता
मांसपेशियों को कम नुकसान होता है
मरीज 1-2 दिन में सहारे से चलने लगता है
5-7 दिनों में सामान्य दिनचर्या (ऑफिस जाना, घर के काम) शुरू कर सकता है।

प्रारंभिक उपचार: RICE फॉर्मूला

चोट लगने पर तुरंत RICE अपनाना चाहिए:
R - Rest (आराम)
I - Ice (बर्फ से सिकाई)
C - Compression (पट्टी बांधाना)
E - Elevation (पैर को ऊंचा रखना)

उपचार की सुविधा:

घुटनों के ये सभी ऑपरेशन शिव चिकित्सालय में आयुष्मान कार्ड के माध्यम से किए जाते है। इसके अतिरिक्त हैल्थ इंश्योरेंस, सीजीएचएस एवं ईसीएचएस कार्ड धारकों को भी उपचार की सुविधा उपलब्ध है।

उत्तराखंड में बदली आर्थिक तस्वीर आय बढ़ी, गरीबी घटी

शंभू नाथ गौतम
वरिष्ठ पत्रकार

उत्तराखंड की अर्थव्यवस्था में पिछले चार वर्षों के दौरान उल्लेखनीय बदलाव देखने को मिले हैं। राज्य सरकार द्वारा विधानसभा में बजट पेश किए जाने से पहले जारी किए गए आर्थिक सर्वेक्षण 2025-26 के आंकड़े बताते हैं कि प्रदेश की आर्थिक स्थिति पहले के मुकाबले काफी मजबूत हुई है। इस अवधि में जहां राज्य की सकल राज्य घरेलू उत्पाद (जीएसडीपी) में उल्लेखनीय बढ़ोतरी दर्ज की गई है, वहीं आम लोगों की आय में भी बड़ा इजाफा हुआ है और गरीबी के स्तर में गिरावट आई है। वर्ष 2022 में जहां प्रदेश की प्रति व्यक्ति आय लगभग 1.94 लाख रुपये थी, वह अब बढ़कर 2 लाख 73 हजार 921 रुपये तक पहुंच गई है। वहीं गरीबी दर 9.7 प्रतिशत से घटकर 6.92 प्रतिशत रह गई है। आर्थिक सर्वेक्षण के ये आंकड़े प्रदेश में उद्योग, पर्यटन, कृषि और सेवा क्षेत्रों में आई गति के साथ-साथ विकास योजनाओं के असर को भी दर्शाते हैं।

उत्तराखंड में 9 मार्च से शुरू होने वाले बजट सत्र से पहले राज्य सरकार ने आर्थिक सर्वेक्षण 2025-26 की रिपोर्ट जारी कर दी है। इस रिपोर्ट में प्रदेश की अर्थव्यवस्था, उद्योग, पर्यटन, शिक्षा, स्वास्थ्य और कृषि से जुड़े कई महत्वपूर्ण आंकड़े सामने आए हैं। आंकड़ों के अनुसार पिछले चार वर्षों में राज्य की अर्थव्यवस्था में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई है। प्रदेश की सकल राज्य घरेलू उत्पाद (जीएसडीपी) में तेज बढ़ोतरी हुई है, गरीबी में कमी आई है और आम लोगों की आय में भी बढ़ोतरी दर्ज की गई है। सरकार का दावा है कि यह प्रगति सुशासन, विकास योजनाओं और निवेश को बढ़ावा देने के प्रयासों का परिणाम है। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने आर्थिक सर्वेक्षण के आंकड़ों को राज्य की विकास यात्रा का प्रमाण बताते हुए कहा कि उत्तराखंड निरंतर विकास की दिशा में आगे बढ़ रहा है। उन्होंने कहा कि सरकार का लक्ष्य प्रदेश को आर्थिक रूप से मजबूत बनाने के साथ-साथ रोजगार और बुनियादी सुविधाओं का विस्तार करना है। आर्थिक सर्वेक्षण के मुताबिक वर्ष 2022 में प्रदेश की प्रति व्यक्ति आय जहां 1.94 लाख रुपये थी, वह बढ़कर 2 लाख 73 हजार 921 रुपये तक पहुंच गई है। इसी अवधि में राज्य में गरीबी का स्तर 9.7 प्रतिशत से घटकर 6.92 प्रतिशत रह गया है, जो सामाजिक-आर्थिक स्थिति में सुधार का संकेत देता है।

जीएसडीपी में तेज उछाल, विकास दर 7.2 प्रतिशत रहने का अनुमान

प्रमुख सचिव नियोजन आर. मीनाक्षी सुंदरम ने आर्थिक सर्वेक्षण जारी करते हुए बताया कि उत्तराखंड की अर्थव्यवस्था लगातार विस्तार कर रही है। वर्ष 2022-23 में प्रदेश की जीएसडीपी 1.9 लाख करोड़ रुपये थी, जो वर्ष 2025-26 में बढ़कर 2.3 लाख करोड़ रुपये होने का अनुमान है। इस अवधि में राज्य की आर्थिक

वृद्धि दर 7.2 प्रतिशत रहने की संभावना जताई गई है। उन्होंने बताया कि रियल प्रति व्यक्ति जीएसडीपी भी लगातार बढ़ रही है और इसके 1.5 लाख रुपये तक पहुंचने का अनुमान है, जो लगभग 6.2 प्रतिशत की वृद्धि को दर्शाता है। आर्थिक सर्वेक्षण के अनुसार राज्य की अर्थव्यवस्था में मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर का योगदान सबसे अधिक 26.02 प्रतिशत है, जो औद्योगिक विकास की मजबूती को दर्शाता है। आर्थिक सर्वेक्षण के आंकड़े बताते हैं कि उत्तराखंड में उद्योगों की संख्या लगातार बढ़ रही है। वर्ष 2022 में प्रदेश में लगभग 59 हजार उद्योग थे, जो अब बढ़कर 79 हजार से अधिक हो गए हैं। इसी अवधि में बड़े उद्योगों की संख्या 107 से बढ़कर 128 हो गई है। सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योग (एमएसएमई) क्षेत्र ने रोजगार सृजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। वर्ष 2022 में एमएसएमई क्षेत्र से लगभग 3 लाख 43 हजार लोगों को रोजगार मिल रहा था, जबकि वर्ष 2025 तक यह संख्या बढ़कर 4 लाख 56 हजार से अधिक हो गई है। इससे स्पष्ट है कि छोटे उद्योगों के विस्तार से प्रदेश में रोजगार के नए अवसर पैदा हुए हैं।

स्टार्टअप संस्कृति को मिल रहा बढ़ावा

प्रदेश में नवाचार और उद्यमिता को प्रोत्साहन देने के लिए सरकार की पहल का असर भी आर्थिक सर्वेक्षण में दिखाई देता है। वर्ष 2017 में उत्तराखंड में एक भी स्टार्टअप पंजीकृत नहीं था, जबकि वर्ष 2022 तक 702 स्टार्टअप पंजीकृत हुए। अब इनकी संख्या बढ़कर 1,750 से अधिक हो गई है। युवाओं को उद्यमिता के लिए प्रेरित करने के लिए राज्य सरकार विभिन्न शिक्षण संस्थानों में बूट कैंप और नवाचार कार्यक्रम आयोजित कर रही है। चयन प्रक्रिया के बाद उत्कृष्ट नवाचारों को नकद पुरस्कार और अन्य सहयोग प्रदान किया जाता है, जिससे युवाओं को नए विचारों के साथ आगे बढ़ने का अवसर मिल रहा है।

उत्तराखंड में पर्यटन के साथ बढ़े होटल और होमस्टे

उत्तराखंड की अर्थव्यवस्था में पर्यटन की अहम भूमिका है और आर्थिक सर्वेक्षण में इस क्षेत्र की प्रगति भी सामने आई है। वर्ष 2022 में प्रदेश में 8,225 होटल थे, जिनकी संख्या बढ़कर 10,509 हो गई है। इसी तरह होमस्टे की संख्या 3,935 से बढ़कर 6,061 तक पहुंच गई है।

पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए हवाई संपर्क भी मजबूत किया गया है। वर्ष 2022 में राज्य में केवल 2 हेलीपोर्ट थे, जो अब बढ़कर 7 हो गए हैं। वहीं हेलीपैड की संख्या 60 से बढ़कर 118 तक पहुंच गई है। पिछले चार वर्षों में प्रदेश में 885 किलोमीटर नई सड़कों का निर्माण भी किया गया है, जिससे दूरस्थ क्षेत्रों तक पहुंच आसान हुई है।

राज्य में शिक्षा के क्षेत्र में भी सुधार

आर्थिक सर्वेक्षण में शिक्षा के क्षेत्र में भी सकारात्मक बदलाव का उल्लेख किया गया है। प्राथमिक विद्यालयों में ग्रॉस एनरोलमेंट रेट 91.19 प्रतिशत से बढ़कर 103 प्रतिशत से अधिक हो गया है। माध्यमिक स्तर पर भी यह आंकड़ा 88.23 प्रतिशत से बढ़कर 93.54 प्रतिशत तक पहुंच गया है। विद्यालय छोड़ने वाले बच्चों की संख्या में भी कमी आई है। प्राथमिक स्तर पर ड्रॉपआउट दर 1.64 प्रतिशत से घटकर 1.41 प्रतिशत हो गई है, जबकि माध्यमिक स्तर पर यह 7.65 प्रतिशत से घटकर 4.59 प्रतिशत रह गई है। उच्च शिक्षा के क्षेत्र में भी विस्तार हुआ है। राज्य में डिग्री कॉलेजों की संख्या 124 से बढ़कर 139 हो गई है, जबकि सरकारी और निजी इंजीनियरिंग कॉलेजों की संख्या 20 से बढ़कर 52 तक पहुंच गई है।

कृषि और जड़ी-बूटी की खेती में बढ़ोतरी

कृषि क्षेत्र में भी उत्पादकता में वृद्धि दर्ज की गई है। धान और गेहूं की उत्पादकता 28.23 क्विंटल प्रति हेक्टेयर से बढ़कर 32.47 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक पहुंच गई है। सबसे उल्लेखनीय वृद्धि औषधीय और सुगंधित पौधों की खेती में हुई है। वर्ष 2022 में इसका क्षेत्रफल केवल 900 हेक्टेयर था, जो अब बढ़कर 10 हजार हेक्टेयर तक फैल गया है। पशुपालन और मत्स्य पालन के क्षेत्र में भी उत्पादन बढ़ा है। दूध उत्पादन 50.92 लाख लीटर प्रतिदिन से बढ़कर 54.59 लाख लीटर प्रतिदिन हो गया है, जबकि मछली उत्पादन 7,325 टन से बढ़कर 10,487 टन के पार पहुंच गया है।

गैरसैंण में 9 मार्च से शुरू होगा बजट सत्र

राज्य की ग्रीष्मकालीन राजधानी गैरसैंण में 9 मार्च से बजट सत्र शुरू होने जा रहा है। सत्र के दौरान सरकार कई महत्वपूर्ण विधेयक सदन में पेश करेगी। इनमें समान नागरिक संहिता (यूसीसी) संशोधन विधेयक भी शामिल है, जिसमें कुछ नए प्रावधान जोड़े गए हैं। प्रस्तावित संशोधन के अनुसार पहचान छिपाकर विवाह करने पर मामला दर्ज किया जा सकेगा और ऐसी शादी को अमान्य माना जाएगा। इसके अलावा निवेश प्रोत्साहन और श्रम व्यवस्था से जुड़े संशोधन विधेयक भी सदन में पेश किए जाएंगे। सरकार का मानना है कि इन कदमों से निवेश को बढ़ावा मिलेगा और रोजगार के अवसर बढ़ेंगे। आर्थिक सर्वेक्षण के आंकड़े ऐसे समय सामने आए हैं जब प्रदेश में विकास और निवेश को लेकर सरकार सक्रिय है। रिपोर्ट से यह संकेत मिलता है कि उत्तराखंड की अर्थव्यवस्था तेजी से आगे बढ़ रही है और आने वाले वर्षों में उद्योग, पर्यटन और नवाचार के क्षेत्र में और अधिक अवसर पैदा होने की संभावना है।

बिजली उत्पादन और ऊर्जा क्षेत्र में वृद्धि

ऊर्जा क्षेत्र में भी उत्तराखंड ने उल्लेखनीय प्रगति की है। वर्ष 2022 में प्रदेश में 5,157 मिलियन यूनिट बिजली उत्पादन होता था, जो अब बढ़कर 16,500 मिलियन यूनिट तक पहुंच गया है। इसी अवधि में बिजली की खपत भी 12,518 मिलियन यूनिट से बढ़कर 17,192 मिलियन यूनिट हो गई है। सौर ऊर्जा के क्षेत्र में भी तेजी से विस्तार हुआ है। वर्ष 2022 में सोलर पावर से 439 मेगावाट बिजली का उत्पादन होता था, जो अब बढ़कर 1,027 मेगावाट तक पहुंच गया है। राज्य के स्वास्थ्य क्षेत्र में भी सुधार देखने को मिला है। आर्थिक सर्वेक्षण के अनुसार प्रदेश में औसत जीवन प्रत्याशा 71.7 वर्ष से बढ़कर 73 वर्ष हो गई है। शिशु मृत्यु दर 22 से घटकर 20 पर आ गई है, जबकि मातृ मृत्यु दर 103 से घटकर 91 तक पहुंच गई है। स्वच्छता के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल की गई है। वर्ष 2022 में प्रदेश के 97 प्रतिशत घरों में शौचालय की सुविधा थी, जो अब 100 प्रतिशत तक पहुंच चुकी है।

टिहरी लेक फेस्टिवल का भव्य आगाज

टिहरी लेक फेस्टिवल के भव्य आगाज के साथ टिहरी झील एक बार फिर रोमांच, संस्कृति और पर्यटन के रंगों से सराबोर हो उठी। चार दिन तक चलने वाले इस महोत्सव का शुभारंभ मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने किया। फेस्टिवल में एडवेंचर स्पोर्ट्स, हॉट एयर बैलून, बोटिंग, सांस्कृतिक प्रस्तुतियों और स्थानीय लोक कलाकारों के कार्यक्रमों के जरिए पर्यटकों को आकर्षित किया जा रहा है, जिससे टिहरी को अंतरराष्ट्रीय पर्यटन मानचित्र पर स्थापित करने की दिशा में प्रयास किया जा रहा है।

उत्तराखंड की खूबसूरत वादियों के बीच स्थित टिहरी लेक एक बार फिर उत्सव, रोमांच और संस्कृति के रंगों से सराबोर हो उठी। झील के किनारे शुरू हुए टिहरी लेक फेस्टिवलने पूरे क्षेत्र में उत्साह और उमंग का माहौल बना दिया है। चार दिनों तक चलने वाले इस भव्य आयोजन का शुभारंभ मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने किया। इस अवसर पर प्रदेश के कई मंत्री, जनप्रतिनिधि, अधिकारी और बड़ी संख्या में पर्यटक भी मौजूद रहे। फेस्टिवल के उद्घाटन के साथ ही टिहरी झील का किनारा रंग-बिरंगी रोशनी और सांस्कृतिक प्रस्तुतियों से जगमगा उठा। झील के शांत पानी में जब रोशनी की परछाइयाँ पड़ीं तो ऐसा लगा मानो पूरा क्षेत्र किसी उत्सव की कहानी कह रहा हो। स्थानीय कलाकारों की प्रस्तुतियों, लोकगीतों और पारंपरिक नृत्यों ने कार्यक्रम में चार चांद लगा दिए। दूर-दूर से आए पर्यटक भी इस अनूठे माहौल का आनंद लेते नजर आए। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने इस अवसर पर कहा कि टिहरी झील केवल उत्तराखंड की पहचान ही नहीं, बल्कि देश के पर्यटन मानचित्र पर तेजी से उभरता हुआ केंद्र भी बन रही है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार का लक्ष्य टिहरी को अंतरराष्ट्रीय स्तर के पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करना है, ताकि यहां आने वाले पर्यटकों को रोमांच, प्रकृति और संस्कृति का अनूठा संगम देखने को मिले। फेस्टिवल के दौरान एडवेंचर स्पोर्ट्स का भी विशेष आकर्षण देखने को मिल रहा है। झील के ऊपर उड़ते हॉट एयर बैलून, पानी पर दौड़ती स्पीड बोट्स और रोमांच से भरपूर जेट स्की का आनंद लेने के लिए बड़ी संख्या में पर्यटक पहुंच रहे हैं। इसके साथ ही कायकिंग, पैरासेलिंग, बनाना राइड और बोटिंग जैसी गतिविधियां भी लोगों को खूब आकर्षित कर रही हैं। टिहरी लेक फेस्टिवल केवल रोमांच का मंच नहीं है, बल्कि यह उत्तराखंड की समृद्ध लोक संस्कृति को भी सामने लाने का अवसर देता है। कुमाऊं और गढ़वाल के लोक कलाकारों ने अपनी पारंपरिक वेशभूषा में लोकनृत्य और लोकगीतों की शानदार प्रस्तुतियां दीं। ढोल-दमाऊं और रणसिंघा की गूंज के बीच जब कलाकार मंच पर उतरे तो वहां मौजूद हर व्यक्ति भावुक हो उठा। स्थानीय लोगों के लिए यह आयोजन केवल एक फेस्टिवल नहीं, बल्कि उम्मीदों का नया सवेरा भी है। टिहरी के होटल, होमस्टे, छोटे दुकानदार और स्थानीय व्यवसायी इस आयोजन से काफी उत्साहित हैं। उनका मानना है कि ऐसे आयोजनों से पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा और स्थानीय युवाओं को रोजगार के नए अवसर भी मिलेंगे। फेस्टिवल के दौरान स्थानीय हस्तशिल्प और पारंपरिक उत्पादों की प्रदर्शनी भी लगाई गई है। यहां आने वाले पर्यटक उत्तराखंड की पारंपरिक कला और हस्तशिल्प से रूबरू हो रहे हैं। कई स्टॉलों पर पहाड़ी व्यंजनों की खुशबू भी लोगों को अपनी ओर खींच रही है। इस पूरे आयोजन में प्रशासन और पर्यटन विभाग ने सुरक्षा और व्यवस्थाओं पर भी विशेष ध्यान दिया है। झील के आसपास सुरक्षा के कड़े इंतजाम किए गए हैं, ताकि पर्यटक सुरक्षित तरीके से हर गतिविधि का आनंद ले सकें। टिहरी लेक फेस्टिवल धीरे-धीरे उत्तराखंड के सबसे बड़े पर्यटन आयोजनों में से एक बनता जा रहा है। हर साल यहां आने वाले पर्यटकों की संख्या बढ़ रही है और यही वजह है कि राज्य सरकार भी इसे और भव्य बनाने के लिए लगातार प्रयास कर रही है।

टिहरी लेक फेस्टिवल से पर्यटन को नई पहचान देने की पहल

टिहरी लेक फेस्टिवल का उद्देश्य केवल मनोरंजन तक सीमित नहीं है। यह आयोजन उत्तराखंड के पर्यटन को नई पहचान देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है। राज्य सरकार लंबे समय से टिहरी झील को एडवेंचर और वाटर स्पोर्ट्स का प्रमुख केंद्र बनाने की योजना पर काम कर रही है। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने कहा कि उत्तराखंड केवल चारधाम यात्रा के लिए ही नहीं, बल्कि एडवेंचर और प्रकृति पर्यटन के लिए भी दुनिया भर में अपनी अलग पहचान बना सकता है। उन्होंने कहा कि टिहरी झील में मौजूद अपार संभावनाओं को देखते हुए सरकार यहां पर्यटन सुविधाओं का तेजी से विकास कर रही है। उन्होंने कहा कि आने वाले समय में टिहरी में और भी बड़े आयोजन किए जाएंगे, जिससे यहां देश-विदेश से पर्यटक आएंगे। इससे स्थानीय लोगों की आजीविका मजबूत होगी और क्षेत्र का आर्थिक विकास भी तेज होगा। फेस्टिवल में शामिल होने आए कई पर्यटकों ने भी इस आयोजन की सराहना की। उनका कहना था

कि टिहरी झील की प्राकृतिक सुंदरता और यहां मिलने वाला रोमांच किसी भी अंतरराष्ट्रीय पर्यटन स्थल से कम नहीं है। कई पर्यटकों ने कहा कि वे पहली बार टिहरी आए हैं और यहां का अनुभव उनके लिए अविस्मरणीय है। वहीं स्थानीय युवाओं के लिए यह फेस्टिवल एक प्रेरणा भी बन रहा है। कई युवा एडवेंचर स्पोर्ट्स और पर्यटन से जुड़े नए व्यवसाय शुरू करने की योजना बना रहे हैं। उनका मानना है कि अगर ऐसे आयोजन नियमित रूप से होते रहे तो टिहरी जल्द ही देश के प्रमुख पर्यटन स्थलों में शामिल हो सकता है। फेस्टिवल के दौरान शाम के समय झील के किनारे आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रमों ने माहौल को और भी खास बना दिया। जब पहाड़ों के बीच संगीत की धुनें गूंजती हैं और झील के शांत पानी पर रोशनी झिलमिलाती है, तो वह दृश्य हर किसी के दिल को छू जाता है। टिहरी लेक फेस्टिवल केवल एक आयोजन नहीं, बल्कि पहाड़ की उम्मीदों, सपनों और नई संभावनाओं की कहानी भी है। यह फेस्टिवल दिखाता है कि अगर प्राकृतिक संसाधनों का सही तरीके से उपयोग किया जाए तो पहाड़ों की अर्थव्यवस्था को नई दिशा दी जा सकती है। चार दिनों तक चलने वाला यह आयोजन टिहरी झील को उत्सव के रंगों से भर देगा। उम्मीद की जा रही है कि आने वाले दिनों में हजारों पर्यटक यहां पहुंचेंगे और इस अनूठे अनुभव का हिस्सा बनेंगे। टिहरी की शांत वादियों में गूंजता यह उत्सव मानो एक संदेश दे रहा है कि पहाड़ों में केवल सन्नाटा नहीं, बल्कि संभावनाओं की एक नई दुनिया भी बसती है। और यही संदेश टिहरी लेक फेस्टिवल हर साल दुनिया तक पहुंचाने की कोशिश करता है।

जो भारत का नागरिक नहीं, उसे बाहर किया जाएगा

देवभूमि उत्तराखंड में आयोजित "चार साल बेमिसाल" कार्यक्रम में शनिवार को केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने बड़ा संदेश दिया। हरिद्वार में जनसभा को संबोधित करते हुए उन्होंने साफ कहा कि जो भारत का नागरिक नहीं है, उसे देश में रहने की अनुमति नहीं दी जाएगी और ऐसे घुसपैठियों को बाहर किया जाएगा। इस दौरान उन्होंने कांग्रेस और राहुल गांधी पर भी तीखा हमला बोलते हुए कहा कि कुछ लोग हर मुद्दे पर नकारात्मक राजनीति करते हैं। शाह ने उत्तराखंड के विकास कार्यों का जिक्र करते हुए केंद्र और राज्य सरकार की उपलब्धियां भी गिनाईं। कार्यक्रम के दौरान उन्होंने पाकिस्तान और अफगानिस्तान से आए कुछ शरणार्थियों को भारत की नागरिकता के प्रमाणपत्र सौंपे, कई विकास कार्यों का शिलान्यास और लोकार्पण किया तथा नई व्यवस्था से जुड़े कार्यक्रमों में भी भाग लिया। इस मौके पर मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने उनका स्वागत किया। दिव्य हिमगिरि रिपोर्ट।

देवभूमि उत्तराखंड में राज्य सरकार के चार साल पूरे होने के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने कई अहम संदेश दिए। हरिद्वार में आयोजित जनसभा को संबोधित करते हुए उन्होंने घुसपैठ के मुद्दे पर सख्त रुख अपनाते हुए कहा कि जो भारत का नागरिक नहीं है, उसे देश में रहने की अनुमति नहीं दी जाएगी। ऐसे लोगों को देश से बाहर किया जाएगा। इस दौरान उन्होंने कांग्रेस और राहुल गांधी पर भी तीखा हमला बोला और कहा कि कुछ लोग हर मुद्दे पर नकारात्मक राजनीति करते हैं, लेकिन देश अब तुष्टिकरण की राजनीति को स्वीकार नहीं करेगा। केंद्रीय गृह मंत्री ने अपने संबोधन की शुरुआत भारत माता की जय के उद्घोष के साथ की। उन्होंने कहा कि उत्तराखंड की धरती त्याग, तपस्या और बलिदान की भूमि है। उन्होंने देवभूमि को नमन करते हुए बाबा केदार, गंगोत्री, यमुनोत्री और हेमकुंड साहिब को प्रणाम किया। अमित शाह ने कहा कि उत्तराखंड के युवाओं ने राज्य के अधिकारों के लिए लंबा संघर्ष किया है। उन्होंने कहा कि एक समय ऐसा था जब इस क्षेत्र के लोगों को अपने अधिकारों के लिए सड़कों पर

उतरना पड़ा था और उस समय कांग्रेस की सरकार ने आंदोलनकारियों पर दमन किया था। अमित शाह ने कहा कि रामपुर तिराहा की घटना आज भी लोगों के दिलों में जिंदा है, जब राज्य आंदोलनकारियों पर अत्याचार हुआ था। उन्होंने कहा कि अंततः पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने उत्तराखंड राज्य का गठन कर यहां की जनता के सपने को साकार किया। शाह ने कहा कि आज वही उत्तराखंड विकास के रास्ते पर तेजी से आगे बढ़ रहा है।

उन्होंने राज्य सरकार की उपलब्धियों का उल्लेख करते हुए कहा कि मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के नेतृत्व में उत्तराखंड ने विकास की दिशा में तेजी से कदम बढ़ाए हैं। उन्होंने कहा कि बीते चार वर्षों में राज्य में विकास कार्यों को नई गति मिली है और सरकार जनता की समस्याओं के समाधान के लिए लगातार प्रयास कर रही है। कार्यक्रम के दौरान केंद्रीय गृह मंत्री ने नई न्याय व्यवस्था से जुड़े कार्यक्रमों का भी जिक्र किया। उन्होंने कहा कि अंग्रेजों के बनाए लगभग डेढ़ सौ साल पुराने कानूनों को समाप्त कर देश में नई न्याय संहिता लागू की गई है, जो नागरिकों की सुरक्षा और न्याय प्रक्रिया को अधिक प्रभावी बनाएगी। उन्होंने कहा कि आने वाले समय में न्याय व्यवस्था को और अधिक तेज और पारदर्शी बनाने का प्रयास किया जा रहा है ताकि आम नागरिक को समय पर न्याय मिल सके।

अमित शाह ने कहा कि नई व्यवस्था के तहत यह लक्ष्य रखा गया है कि मुकदमा दर्ज होने से लेकर सर्वोच्च न्यायालय तक की पूरी न्यायिक प्रक्रिया निर्धारित समय सीमा में पूरी हो सके। उन्होंने कहा कि सरकार का उद्देश्य है कि लोगों को वर्षों तक न्याय के लिए भटकना न पड़े।

घुसपैठ के मुद्दे पर बोलते हुए केंद्रीय गृह मंत्री ने स्पष्ट कहा कि देश की सुरक्षा के साथ किसी भी प्रकार का समझौता नहीं किया जाएगा। उन्होंने कहा कि केदारनाथ से लेकर कन्याकुमारी तक देश की सुरक्षा और संप्रभुता सर्वोपरि है। उन्होंने कहा कि कुछ लोग इस मुद्दे पर भी राजनीति करते हैं, लेकिन सरकार देशहित में कड़े फैसले लेने से पीछे नहीं हटेगी। अमित शाह ने कांग्रेस पर हमला बोलते हुए कहा कि नौ वर्षों के शासन में भारतीय जनता पार्टी की सरकार पर भ्रष्टाचार का कोई बड़ा आरोप नहीं लगा है, जबकि पहले की सरकारों पर कई प्रकार के आरोप लगते रहे हैं। उन्होंने कहा कि देश अब पारदर्शी शासन की दिशा में आगे बढ़ रहा है। कार्यक्रम में उन्होंने समान नागरिक संहिता का भी उल्लेख किया और कहा कि उत्तराखंड देश का पहला राज्य है जिसने इस कानून को लागू किया है। उन्होंने कहा कि यह कानून समाज में समानता और न्याय की भावना को मजबूत करेगा और जनसंख्या के असंतुलन जैसी चुनौतियों से निपटने में भी मदद करेगा। इसके लिए एक उच्च स्तरीय समिति के गठन का निर्णय लिया गया है, जो आगे की प्रक्रिया पर काम करेगी। केंद्रीय गृह मंत्री ने कहा कि जनता को कांग्रेस से भी हिसाब मांगना चाहिए कि उनके शासनकाल में उत्तराखंड को कितना विकास मिला। उन्होंने कहा कि वर्ष 2014 के बाद केंद्र सरकार ने राज्य के विकास के लिए बड़े पैमाने पर आर्थिक सहायता प्रदान की है।

गृहमंत्री अमित शाह ने विकास कार्यों और योजनाओं का किया उल्लेख

अपने संबोधन के दौरान केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने उत्तराखंड में हुए विकास कार्यों का भी विस्तार से उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि वर्ष 2014 के बाद केंद्र सरकार ने राज्य को लगभग एक लाख 87 हजार करोड़ रुपये की सहायता दी है, जिससे बुनियादी ढांचे के विकास को गति मिली है। उन्होंने कहा कि चारधाम से जुड़े मार्गों का विस्तार किया गया है और तीर्थस्थलों के विकास के लिए भी बड़े पैमाने पर काम किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि केदारनाथ, बदरीनाथ, गंगोत्री और यमुनोत्री धाम के विकास के लिए हजारों करोड़ रुपये की परियोजनाएं चलाई जा रही हैं। साथ ही दिल्ली और देहरादून के बीच आधुनिक मार्ग का निर्माण भी किया जा रहा है, जिससे यात्रा का समय कम होगा और लोगों को बेहतर सुविधा मिलेगी। अमित शाह ने कहा कि राज्य में राष्ट्रीय राजमार्गों के निर्माण पर भी विशेष ध्यान दिया गया है। उन्होंने बताया कि कई नए मार्गों का निर्माण किया गया है और कई परियोजनाएं अभी निर्माणाधीन हैं। इससे पहाड़ी क्षेत्रों में रहने वाले लोगों को बेहतर संपर्क सुविधा मिल रही है और पर्यटन को भी बढ़ावा मिल रहा है। उन्होंने कहा कि वर्ष 2009 से 2014 के बीच उत्तराखंड का औसत बजट काफी सीमित था, लेकिन पिछले कुछ वर्षों में राज्य के बजट में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार के दौरान राज्य का बजट कई गुना बढ़ा है, जिससे विकास योजनाओं को मजबूती मिली है। केंद्रीय गृह मंत्री ने कहा कि राज्य की प्रति व्यक्ति आय में भी उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। उन्होंने बताया कि वर्ष 2014 में प्रति व्यक्ति आय लगभग एक लाख पच्चीस हजार रुपये थी, जो अब बढ़कर दो लाख तिहत्तर हजार रुपये से अधिक हो गई है। इसी प्रकार राज्य की सकल घरेलू उत्पाद में भी लगातार वृद्धि दर्ज की गई है। उन्होंने कहा कि चारधाम यात्रा में भी तीर्थयात्रियों की संख्या में बड़ी बढ़ोतरी हुई है। पहले की तुलना में अब तीन गुना अधिक श्रद्धालु उत्तराखंड आ रहे हैं। इससे राज्य की अर्थव्यवस्था को भी मजबूती मिली है और स्थानीय लोगों के लिए रोजगार के अवसर बढ़े हैं।

केंद्रीय गृह मंत्री के उत्तराखंड आगमन पर जौलीग्रांट हवाई अड्डे पर मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने उनका स्वागत किया। मुख्यमंत्री ने पुष्पगुच्छ भेंट कर उनका अभिनंदन किया और देवभूमि की परंपरा के अनुसार उन्हें सम्मानित किया। इसके बाद केंद्रीय गृह मंत्री हरिद्वार पहुंचे, जहां उन्होंने ई-जीरो प्राथमिकी प्रणाली की शुरुआत की। इस नई व्यवस्था के माध्यम से अब लोग दूरभाष सेवा के जरिए भी अपनी शिकायत दर्ज करा सकेंगे। बताया गया कि इस प्रणाली के तहत पहली प्राथमिकी अल्मोड़ा निवासी एक व्यक्ति द्वारा धोखाधड़ी के मामले में दर्ज कराई गई। कार्यक्रम के दौरान मुख्यमंत्री धामी ने केंद्रीय गृह मंत्री को राज्य की सांस्कृतिक पहचान से जुड़ी एक पारंपरिक टोपी भेंट कर सम्मानित किया। यह उत्तराखंड की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का प्रतीक माना जाता है।

इस मौके पर पाकिस्तान और अफगानिस्तान से आए कुछ शरणार्थियों को भारत की नागरिकता के प्रमाणपत्र भी प्रदान किए गए। इनमें शैलेष, जसपाल परमार, दुर्गा लाली राजपूत और हसेरी बाई जैसे लोगों के नाम शामिल थे। नागरिकता प्रमाणपत्र मिलने के बाद इन लोगों ने खुशी जाहिर की और कहा कि अब उन्हें भारत में स्थायी पहचान मिल गई है। कार्यक्रम में पुलिस विभाग के पांच आरक्षियों को भी उनके उत्कृष्ट कार्य के लिए सम्मानित किया गया। इसके अलावा हाल ही में नियुक्ति पाने वाले लगभग दो हजार पुलिस कर्मियों ने भी कार्यक्रम में भाग लिया और केंद्रीय गृह मंत्री का स्वागत किया। अपने दौरे के दौरान केंद्रीय गृह मंत्री ने कई विकास परियोजनाओं का शिलान्यास और लोकार्पण भी किया। इनमें सैकड़ों करोड़ रुपये की परियोजनाएं शामिल थीं, जो राज्य के बुनियादी ढांचे को मजबूत करने में मदद करेंगी। इस कार्यक्रम में लगभग तीन सौ बारह करोड़ रुपये से अधिक की उन्नीस परियोजनाओं का शिलान्यास किया

गया, जबकि एक सौ पंद्रह करोड़ रुपये से अधिक की बत्तीस परियोजनाओं का लोकार्पण भी किया गया। इन परियोजनाओं का उद्देश्य राज्य में सड़क, सुरक्षा और अन्य बुनियादी सुविधाओं को मजबूत करना है। केंद्रीय गृह मंत्री ने अपने संबोधन के अंत में उत्तराखंड की जनता से अपील करते हुए कहा कि राज्य के विकास को आगे बढ़ाने के लिए जनता का सहयोग आवश्यक है। उन्होंने कहा कि उत्तराखंड में विकास की जो यात्रा शुरू हुई है, उसे और तेज गति देने के लिए सभी को मिलकर प्रयास करना होगा। उन्होंने विश्वास जताया कि आने वाले समय में उत्तराखंड देश के अग्रणी राज्यों में शामिल होगा ।

मोदी-शाह के मार्गदर्शन में तेजी से आगे बढ़ रहा उत्तराखंड : सीएम धामी

हरिद्वार के बैरागी कैंप मैदान में आयोजित उत्तराखंड सरकार के चार साल पूरे होने के अवसर पर मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के मार्गदर्शन में उत्तराखंड तेजी से विकास के रास्ते पर आगे बढ़ रहा है। उन्होंने कहा कि भारतीय जनता पार्टी की सरकार सेवा, सुशासन और राष्ट्र निर्माण के संकल्प के साथ देश के कोने-कोने में विकास की नई गाथा लिख रही है। मुख्यमंत्री धामी ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी आज संकल्प शक्ति और समर्पण के बल पर विश्व की सबसे बड़ी राजनीतिक पार्टी बन चुकी है। उन्होंने कहा कि भाजपा की विचारधारा देश को मजबूत बनाने और आम जनता के जीवन को बेहतर करने की दिशा में लगातार काम कर रही है। उत्तराखंड में भी सरकार विकास को प्राथमिकता देते हुए हर क्षेत्र में नई योजनाओं को आगे बढ़ा रही है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार ने उत्तराखंड के समग्र विकास के साथ-साथ यहां की संस्कृति, परंपरा और सामाजिक संतुलन को सुरक्षित रखने के लिए कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए हैं। धामी ने कहा कि समान नागरिक संहिता लागू करना भी इसी दिशा में उठाया गया एक ऐतिहासिक कदम है, जिससे समाज में समानता और न्याय की भावना मजबूत होगी। मुख्यमंत्री ने कहा कि सरकार का लक्ष्य उत्तराखंड को देश के अग्रणी राज्यों में शामिल करना है। इसके लिए बुनियादी ढांचे, पर्यटन, रोजगार और सुरक्षा से जुड़े क्षेत्रों में लगातार काम किया जा रहा है। उन्होंने विश्वास जताया कि जनता के सहयोग से राज्य विकास की नई ऊंचाइयों को छुएगा।

वाकई अब सबला बनती जा रही है नारी!

डॉ. श्रीगोपाल नारसन, एडवोकेट

सदियों से समाज में नारी की भूमिका को परंपराओं, संस्कृतियों और गहरे जमे विश्वासों ने इस प्रकार गढ़ा कि उसे हमेशा पृष्ठभूमि में रखा गया। प्राचीन काल में नारी को देवी के रूप में पूजा जाता था, वह ज्ञान और शक्ति की प्रतीक थी। लेकिन जैसे-जैसे समय बदला, पितृसत्तात्मक संरचनाओं ने अधिकार ग्रहण कर लिए, जिससे नारी की स्वतंत्रता सीमित हो गई, उसकी आवाज दबा दी गई और उसका योगदान अनदेखा कर दिया गया।और तब एक दिव्य प्रकाश प्रकट हुआ-न विरोध के कोलाहल से, न ही क्रांति के संघर्ष से, बल्कि एक दूरस्थ, अदृश्य लोक से, पार ब्रह्मतत्व से। वह नि:शब्द, फिर भी शक्तिशाली रूप से अवतरित हुआ, जिसने हृदय और मस्तिष्क को आलोकित कर दिया, यह संकेत देते हुए कि परिवर्तन के एक नए युग का आरंभ होने वाला है। हर वर्ष, 8 मार्च को, संपूर्ण विश्व अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाता है-नारी की सहनशक्ति, उपलब्धियों और अधिकारों का सम्मान करते हुए। लेकिन आधुनिक दुनिया में महिलाओं के सशक्तिकरण की चर्चा जोर पकड़ने से बहुत पहले ही, एक आध्यात्मिक आंदोलन-जिसे आज ब्रह्माकुमारीज के नाम से जाना जाता है-आत्मिक शक्ति, नेतृत्व और भीतर की जागृति के माध्यम से यह बदलाव शांत रूप से ला रहा है।

ईश्वरीय संकेतों और दृष्टि से प्रेरित होकर, प्रजापिता ब्रह्मा बाबा ने यह अनुभव किया कि सच्चा आध्यात्मिक नेतृत्व किसी एक लिंग तक सीमित नहीं हो सकता। दिव्य योजना में अटूट विश्वास रखते हुए, उन्होंने नारी शक्ति को ब्रह्माकुमारीज के भविष्य की जिम्मेदारी सौंपी, उन्हें ज्ञान, बुद्धि और नि:स्वार्थ सेवा की मशाल थामने का अधिकार दिया।

यह एक क्रांतिकारी कदम था। उस समय जब महिलाओं को सार्वजनिक रूप से बोलने की भी अनुमति नहीं थी, ब्रह्मा बाबा ने कहा कि मातृशक्ति ही मानवता की आध्यात्मिक मार्गदर्शक बनेगी।

और इन्हीं असाधारण नारियों में कुछ ऐसी भी थीं, जिन्होंने दिव्यता, शक्ति और बुद्धि की नई परिभाषा गढ़ते हुए सच्चे मार्गदर्शक सितारों के रूप में अपनी पहचान बनाई। इसलिए हम कह सकते है कि भले ही नारी को कभी दोयम दर्जे का माना जाता रहा हो,लेकिन आज नारी तमाम विसंगतियों को धकियाकर अपने कैरियर के पंख फैलाकर आकाश को छू लेने की कोशिश में है। हालांकि जो मां जन्म देती है, वही पुत्र के लालच में कोख में पल रही कन्या को भ्रूण रूप में ही हत्या तक कराती रही है। इसी कारण हरियाणा जैसे राज्यो में लिंग असमानता हावी रही है।

लेकिन कानून की सख्ती व समाज मे आई जागरूकता से परिस्थिति बदली है। अपनी विभिन्न उपेक्षाओं के बावजूद नारी ने जीना सीखा है और सफलता की मंजिल पर आगे बढ़ी है। तभी तो फुलबासन बाई जो कभी दो वक्त की रोटी को मोहताज थी, आज वह दो लाख महिलाओं का समूह बनाकर उन्हें रोजगार देने की सफलता की इबादत लिख चुकी है। श्रीमती फूलबासन के नेतृत्व में दो लाख से भी अधिक महिलाओं के इस स्वरोजगार समूह ने शराब में डूबे पुरुषों को सुधारने के लिए भी आंदोलनात्मक अभियान चलाया हुआ है। वे सत्संग के माध्यम से महिलाओं को जोड़ने और उनके जीवन को सही दिशा देने में पिछले बीस साल से जुटी है। उनकी इस उपलब्धि के लिए गत वर्ष सोनी टीवी के धारावाहिक 'कौन बनेगा करोड़पति में कर्मवीर के सम्मान से नवांजी गई छत्तीसगढ़ की पद्मश्री फूलबासन बाई यादव ने हॉट सीट पर बैठकर फिल्म अभिनेत्री रेणुका शहाणे की मदद से पचास लाख रुपये जीते थे। फुलबासन अपनी संस्था 'मां बम्लेश्वरी जनहित समिति' के जरिए समाज सेवा करती हैं। 52 वर्ष की फूलबासन यादव छत्तीसगढ़ की आर्थिक और सामाजिक रूप से पिछड़ी महिलाओं के विकास के लिए काम कर रही हैं। स्वयं आत्मनिर्भर बनने व दुसरो को बनाने के लिए फूलबासन का गरीबी से संघर्ष और दूसरों को सशक्त बनाने का योगदान काफी प्रेरण ादायक है।

इसी तरह 88 वर्षीया निशानेबाज दादी प्रकाशी ने कभी अंग्रेजी की पढ़ाई नही की, लेकिन फर्राटेदार अंग्रेजी बोलती रही। न बचपन मे न कभी जवानी में, उसने कभी बन्दूक को हाथ नही लगाया और न ही कभी तीर कमान चलाई लेकिन उसका निशाना ऐसा है जो हमेशा सटीक बैठता है। तभी तो प्रकाशी को दुनिया भर के लोग शूटर दादी या फिर रिवॉल्वर दादी के नाम से जानते और पहचानते है। पिछले साल ह्रदयघात को मात देकर स्वस्थ हुई प्रकाशी दादी ने कहा कि बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ ही नहीं बेटी खिलाओ भी जरूरी है। यानि बेटियो को खेल के क्षेत्र में भी दो दो हाथ आजमाने चाहिए। उन्होंने चार के बजाए छ अक्षरों का बेटी बचाओ,बेटी पढ़ाओ, बेटी खिलाओ का नारा उदघोषित किया। उत्तर प्रदेश के जिला बागपत के गांव जोहड़ी गांव की रहने वाली दादी प्रकाशी निशानेबाजी में अनेक प्रतियोगिता जीत चुकी हैं तथा निशानेबाजी के लिए देश विदेश की यात्राएं कर चुकी है।इतना ही नहीं, जिस उम्र में बुजुर्ग महिलाएं परमात्मा की याद के लिए पूजा, पाठ भजन आदि हेतु मंदिरों का रुख करती हैं। उस उम्र में प्रकाशी तोमर ने शूटिंग रेंज जाना शुरु किया था। शूटिंग में ख्याति प्राप्त कर चुकी प्रकाशी तोमर देश विदेश में शूटर दादी या फिर रिवॉल्वर दादी के नाम से मशहूर हो चुकी है। निशानेबाजी में प्रकाशी देवी राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में कई मेडल और ट्रॉफी झटक चुकी हैं। प्रकाशी देवी को तत्कालीन राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी द्वारा नारी शक्ति अवॉर्ड भी दिया जा चुका है। इसके साथ ही महिला एवं बाल विकास मंत्रालय द्व ारा 'आइकन लेडी' अवार्ड से सम्मानित किया गया है।वही दुनिया मे सर्वाधिक स्थिर मन की मल्लिका रही ब्रह्माकुमारी दादी जानकी की ईश्वरीय साधना इस कदर थी कि उनके और परमात्मा के बीच मे कभी कोई तीसरा नही रहा। वे हमेशा परमात्मा की याद में लीन रहती और परमात्मा से राजयोग लगाकर बतियाती रहती थी। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की मुख्य प्रशासिका रही दादी जानकी ने 104 वर्ष की आयु तक अपना लौकिक जीवन जिया। दादी जानकी ने कभी अपने पास कोई पर्स नहीं रखा, परन्तु वे आध्यात्मिक दृष्टि से विश्व की सबसे धनी नारी शक्ति रही। शिव बाबा ने खुशी, विश्वास और दुआओं से उनका दामन हमेशा भरकर रखा। वे कहती थी, दुआयें हमारे जीवन का श्रंगार हैं। उन्होंने जीवनभर तीन बातों- सच्चाई, सफाई और सादगी का पालन किया। यही तीन बातें उनके जीवन का आधार, उनकी पूंजी और उनकी शक्ति रही। उन्हें पल- पल महसूस होता था कि शिव बाबा का साथ है और उनसे बाते कर रहा है। दादी जानकी अपने जीवन का अनुभव सुनाया करती थी कि परमात्मा पल पल उनके साथ रहता है और उन्हें सदा परमात्मा की मदद का अनुभव होता है। क्योंकि उन्हें मन-वचन-संकल्प और कर्म में एक परमात्मा के सिवाए और कुछ याद ही नहीं रहता। वे कहा करती थी कि सभी खुश रहें, मस्त रहें और सदा परमात्मा के साथ जीवन में आगे बढ़ते रहे। उनका कहना था कि ईश्वर की मदद, ईश्वर का साथ और ईश्वर को अपना बना लेना ही जीवन सफल करना है। जितना हो, उतना साइलेंस का अभ्यास बढ़ाओ, क्योंकि साइलेंस की पावर सबसे बड़ी पॉवर है। इसी तरह सी. वनमती केरल के एक गरीब परिवार में पैदा हुई। किसी ने भी नहीं सोचा होगा कि एक दिन यह लड़की भारतीय प्रशासनिक सेवा यानि आईएएस अधिकारी बनेगी। वनमती के पिता किराये की कार पर ड्राईवरी करके किसी तरह से घर चलाते थे। इतनी कम आमदनी में आईएसएस बनने की सोचना और उसके लिए संघ लोक सेवा आयोग की परीक्षाओ में सफल होना असंभव सा लगता था, लेकिन वनमती के कड़े परिश्रम ने उसे इस मंजिल तक पहुंचाया। भारतीय प्रशासनिक सेवा अधिकारी वनमती को प्रेरित करने वाली छात्र जीवन मे दो बाते रही। पहली यह कि उनके गृहनगर में जिला मजिस्ट्रेट एक महिला थीं, जिन्हें सभी सम्मान देते थे और दूसरी गंगा यमुना सरस्वती नामक एक सीरियल में, नायक एक महिला आईएएस अधिकारी का किरदार उन्हें बहुत भाया था। वनमती इन्ही दो बातों से प्रेरित हुई और फिर अपनी मंजिल तय करने के लिए आगे बढ़ गई। इसके लिए वनमती को स्कूल जाने के साथ-साथ घर के कामों में भी हाथ बंटाना पड़ता था। वे आजीविका का साधन बनी अपनी भैंसों को चराने के लिए चरागाहों में जाती थी, उनके लिए खिलाने हेतु चारा जंगल से काटकर घर भी लाना पड़ता था। वनमती ने जब 12वीं पास की तो रिश्तेदारों ने शादी के लिए परिवार पर दबाव डालना शुरू कर दिया, लेकिन आईएएस बनने का सपना लिए वनमती बगावत पर उतर आई और शादी करने से साफ इनकार कर दिया। अच्छी बात यह रही कि इस दौरान परिवार का समर्थन भी वनमती के साथ बना रहा।वनमती का परिवार हालांकि आर्थिक रूप से समृद्ध नहीं था, लेकिन परिवार हमेशा उसके साथ सहयोगी बनकर रहा और उन्हें कॉपी किताबें जैसे पर्याप्त संसाधन उपलब्ध कराता रहा। वनमती को अपने परिवार से अच्छा समर्थन मिलने और उनके माता-पिता के वनमती के हित को सर्वपरि रखकर लिए गए फैसले से वनमती की राह आसान हो गई थी। परिवार ने वनमति को आगे की पढ़ाई के लिए प्रोत्साहित किया और 12वीं कक्षा पूरी करने के बाद लड़की की शादी करने की परंपरा को बंद करने में अग्रणी भूमिका निभाई। स्नातक करने के बाद वनमती ने कंप्यूटर एप्लीकेशन में पोस्ट ग्रेजुएशन का कोर्स पूरा किया। उन्होंने जेब खर्चे के लिए एक निजी बैंक में नौकरी भी की। इसके बाद वनमती सन 2015 में संघ लोक सेवा आयोग की परीक्षा में शामिल हुई। इस परीक्षा में उनकी सारी मेहनत, पसीना और आंसू उस समय सब कारगर हो गए, जब इस परीक्षा में वनमती सफल हुई।

(लेखक ख्यातिलब्ध आध्यात्मिक चिंतक व वरिष्ठ साहित्यकार है)

यूकॉस्ट एवं दिव्य हिमगिरि ने मनाया अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस

07 महिलाओं को विज्ञान प्रयोगधर्मी महिला सम्मान तथा 20 महिलाओं को हिमालयी नारी शक्ति सम्मान प्रदान किया

कार्यक्रम में एच एन बी उत्तराखंड चिकित्सा शिक्षा विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो डॉ भानु दुग्गल एवं उत्तराखंड राज्य उपभोक्ता विवाद प्रतितोष आयोग की अध्यक्षा न्यायाधीश कुमकुम रानी ने किया प्रतिभाग

महिला उद्यमियों ने लगाई अपने स्टार्टअप्स की प्रदर्शनी

यूकॉस्ट ने अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर इंस्टीटयूशन ऑफ इंजीनियर्स (इंडिया) सभागार में पांचवें विज्ञान प्रयोगधर्मी महिला सम्मान से 07 महिलाओं को एवं आठवें हिमालयी नारी शक्ति सम्मान से 20 महिलाओं को सम्मानित किया। इस अवसर पर 'स्टार्टअप्स, नवाचार एवं उद्यमिता में महिलाओं की भागीदारी' विषयक कॉनक्लेव भी आयोजित किया गया।

आज यूकॉस्ट द्वारा इंस्टीटयूशन ऑफ इंजीनियर्स, दिव्य हिमगिरि एवं सरादस्ता के संयुक्त तत्वावधान में अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर कॉनक्लेव, महिला उद्यमियों की प्रदर्शनी तथा सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। महिला उद्यमी प्रदर्शनी का उद्घाटन एचएनबी उत्तराखंड चिकित्सा शिक्षा विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो (डॉ) भानु दुग्गल द्वारा किया गया। इस अवसर पर आयोजित कॉनक्लेव को संबोधित करते हुए डॉ दुग्गल ने कहा कि भारत में महिलाओं की उद्यमिता में भागीदारी पुरातन काल से है। उन्होंने अहिल्याबाई होल्कर का जिक्र करते हुए कहा कि उन्होंने गुलामी के दिनों में 18वीं शताब्दी में माहेश्वरी साड़ियों के निर्माण और बिक्री का एक ब्रांड स्थापित कर उस समय कुछ सैकड़ो लेकिन आज देश की लाखों महिलाओं के लिए उद्यमिता का रास्ता खोला। उन्होंने नई पीढ़ी से कहा कि समानता का मतलब ये नहीं कि महिलाएं पुरूषों के मुकाबला करते हुए व्यसनों की तरफ डाइवर्ट हों। कॉनक्लेव की मुख्य पैनलिस्ट डॉ हरिका आर राजेश कुमार ने कहा कि महिलाओं से बेहतर उद्यमी कोई नहीं है, वह बाहर भी और घर में भी एक अच्छे प्रबंधक का रोल निभाती हैं। कॉनक्लेव को अनुराधा डोवल, ममता रावत, श्रद्धा नेगी, गीता चंदोला ने भी अपनी सफलता की कहानियों और अनुभवों को साझा किया। कार्यक्रम के दूसरे सत्र की अध्यक्षता करते हुए यूकॉस्ट के महानिदेशक प्रो डॉ दुर्गेश पंत ने कहा कि यूकॉस्ट 'शी फॉर स्टेम' कार्यक्रम के द्वारा उत्तराखंड के सभी 13 जनपदों में महिलाओं और छात्राओं को विज्ञान और प्रौद्योगिकी के माध्यम से उद्यमिता की ओर ले जा रहा है। दूसरे सत्र की मुख्य अतिथि उत्तराखंड राज्य उपभोक्ता विवाद प्रतितोष आयोग की अध्यक्षा न्यायाधीश सुश्री कुमकुम रानी ने सभी पुरस्कृत महिलाओं को शुभकामनाएं प्रदान की और कहा कि महिलाओं का सुशिक्षित होना और उद्यमशील होना राष्ट्र और समाज के लिए बहुत जरूरी है। कार्यक्रम को संबोधित करते हुएउत्तराखंड स्टेट सेंटर, इंस्टीटयूशन ऑफ इंजीनियर्स (इंडिया) के चेयरमैन इंजी. सीपी शर्मा ने कहा कि भारत सहित दुनिया

इन्हें मिला *'विज्ञान प्रयोगधर्मी महिला सम्मान-2026'*

सुषमा बहुगुणा
रंजना कुकरेती शर्मा
डॉ. रीमा पंत, शिक्षाविद्
राजुली भट्ट
सोनिया देवी
डॉ. विजेता बिष्ट
मोनिका बोहरा

इन्हें मिला *'हिमालयी नारी शक्ति सम्मान-2026'*

अनुराधा डोवल
मधु गुप्ता
डॉ. रमा गोयल
डॉ. ममता कुंवर
डॉ. वीना अस्थाना
ममता रावत
श्रुति जोशी
श्वेता ध्यानी
वंदना श्रीवास्तव
श्रद्धा नेगी
गीता चंदोला
अर्चना थपलियाल
प्रीति मनराल
इंजी. बबीता कोहली
डॉ. मंजू ओ. पाई
डॉ. हरिका आर. राजेश कुमार
डॉ. शेफाली अग्रवाल
डॉ. बबीता बेहेरा
सुरभि माथुर
अमिता गर्ग

ने हर क्षेत्र में एक से बढ़कर एक महिला नेतृत्व प्रदान किए हैं, जिनसे प्रेरणा लेने की आवश्यकता है। कार्यक्रम का परिचय एवं स्वागत संबोधन सरादस्ता के अध्यक्ष एवं दिव्य हिमगिरि के संपादक डॉ कुँवर राज अस्थाना ने किया। संचालन यूकॉस्ट की वैज्ञानिक अधिकारी डॉ मंजू सुंदरियाल ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन यूकॉस्ट के वरिष्ठ वैज्ञानिक अधिकारी डॉ ओ.पी. नौटियाल ने किया। कार्यक्रम में पूर्व तकनीकी शिक्षा निदेशक आरपी गुप्ता, इंस्टीटयूशन ऑफ इंजीनियर्स के सचिव हिमांशु अवस्थी, पूर्व चेयरमैन एनके यादव, आईईआई फैलो एसए अंसारी, हेमेश्वरी शर्मा सहित बड़ी संख्या में महिलाएं एवं छात्राएं उपस्थित थी।

जानिए कैसा होगा आपका यह सप्ताह

पं. दीपक प्रसाद, शास्त्री (मो. 9557730042)
(ज्योतिष, कर्मकाण्ड, धर्मिक अनुष्ठान आदि)

मेष राशि- वर्तमान स्थिति पर फोकस रखें और बातों को शांत दिमाग से सुलझाएं। बच्चों के साथ सहयोगात्मक व्यवहार जरूरी है। दूसरे कामों के साथ घर-परिवार को भी समय देना होगा, तभी तालमेल बना रहेगा। व्यवसाय को लेकर भविष्य से जुड़ी कुछ गतिविधियां शुरू होने वाली हैं। घर का माहौल शांतिपूर्ण रहेगा। भाग्यशाली रंग- बादामी, भाग्यशाली अंक- 2

वृषभ राशि- बेवजह की बातों में उलझने के बजाय खुद को व्यस्त रखें। दूसरों पर अधिक भरोसा करने की बजाय अपने निर्णय को प्राथमिकता देना बेहतर रहेगा। थोड़ा समय मनोरंजन या हल्की गतिविधियों में बिताने से मन स्थिर रहेगा। नौकरीपेशा लोगों को मनमाफिक कार्यभार मिलने से राहत रहेगी। पार्टनर के साथ प्रेम बढ़ेगा। भाग्यशाली रंग- लाल, भाग्यशाली अंक- 1

मिथुन राशि- मेहनत के बावजूद परिणाम मध्यम रह सकते हैं। फाइनेंस से जुड़े कामों में खास सावधानी जरूरी है। जीवनसाथी की सेहत का ध्यान रखें। प्रेम संबंधों को लेकर कोई बड़ा फैसला लेने से पहले सोच-विचार करें। दिनचर्या और स्वास्थ्य के प्रति सजग रहना आपको मानसिक और शारीरिक रूप से फिट रखेगा। भाग्यशाली रंग- आसमानी, भाग्यशाली अंक- 6

कर्क राशि- आज किसी भी महत्वपूर्ण फैसले को फिलहाल टालना बेहतर रहेगा। कर्मचारियों का सहयोग बना रहेगा। प्रॉपर्टी और वाहन की खरीद-फरोख्त से जुड़ी गतिविधियां बेहतर हो सकती हैं। युवा वर्ग को नया काम शुरू करते समय किसी अनुभवी की मदद लेना फायदेमंद रहेगा। घर का माहौल शांतिपूर्ण रहेगा। भाग्यशाली रंग- नीला, भाग्यशाली अंक- 7

सिंह राशि- आपकी वाकपटुता और काम करने की शैली लोगों को प्रभावित करेगी। दौड़-धूप के बावजूद आप खुद को संभाल लेंगे। आर्थिक स्थिति मजबूत करने के लिए समय अनुकूल है। मन को शांत रखने के लिए आध्यात्मिक गतिविधियों में समय देना लाभदायक रहेगा। दांपत्य जीवन में बाहरी हस्तक्षेप से बचें। भाग्यशाली रंग- लाल, भाग्यशाली अंक- 9

कन्या राशि- नया काम शुरू किया है तो मेहनत के बाद ही सफलता मिलेगी, तनाव न लें। महिलाओं से जुड़े व्यवसाय में विशेष फायदा हो सकता है। नौकरी में पदोन्नति संभव है, लेकिन कार्यभार भी बढ़ेगा। पति-पत्नी के बीच तालमेल बना रहेगा, जिससे घर की व्यवस्था भी ठीक रहेगी। प्रेम संबंधों में नजदीकियां बनी रहेंगी। भाग्यशाली रंग- केसरिया, भाग्यशाली अंक- 5

तुला राशि- युवाओं के लिए उम्मीद की नई किरण नजर आएगी। आपसी तनाव किसी की मध्यस्थता से आसानी से सुलझ सकता है, इसलिए बात को बढ़ाने के बजाय समाधान पर फोकस रखें। परिजनों के साथ समय अच्छा बीतेगा। विवाहेत्तर संबंध जैसी स्थिति बन सकती है, जिससे घर में तनाव बढ़ेगा। गिरने या चोट लगने की आशंका है। भाग्यशाली रंग- हरा, भाग्यशाली अंक- 4

वृश्चिक राशि- प्रॉपर्टी में निवेश से जुड़ी सकारात्मक योजना भी बन सकती है। इन कमजोरियों को दूर करेंगे तो बेहतर परिणाम मिलेंगे। समय पर काम करने की आदत जरूरी है। नौकरी में किसी सहयोगी की वजह से स्थिति बिगड़ सकती है, इसलिए बातचीत और काम दोनों में सतर्क रहें। परिवार में तालमेल और प्रेम बना रहेगा। भाग्यशाली रंग- सफेद, भाग्यशाली अंक- 1

धनु राशि- गैरकानूनी काम से दूर रहें। आय के साथ खर्च भी बढ़ेंगे, इसलिए बजट जरूरी है। किसी करीबी मित्र से निजी बात पर विवाद हो सकता है, इसलिए शब्दों पर नियंत्रण रखें। मेहनत का फायदा आगे मिलेगा। मार्केटिंग और लेनदेन से जुड़े फैसले लेते समय अनुभवी व्यक्ति से सलाह जरूर लें। वैवाहिक संबंध मधुर रहेंगे। भाग्यशाली रंग- गुलाबी, भाग्यशाली अंक- 5

मकर राशि- योजनाओं को समय पर लागू करें। समय और भाग्य दोनों का सहयोग मिल रहा है। खास लोगों से मुलाकात सार्थक रहेगी। अपनी वाकपटुता से बाधाएं पार करेंगे और आगे बढ़ेंगे। मेहनत का परिणाम मिलने के संकेत हैं। नौकरीपेशा लोगों को कार्यप्रणाली में कुछ बदलाव करने पड़ सकते हैं। भाग्यशाली रंग- नीला, भाग्यशाली अंक- अंक- 4

कुंभ राशि- पैसे के मामले में किसी संबंधी से तनाव हो सकता है। धैर्य और संयम जरूरी है। संतान की किसी नकारात्मक गतिविधि से चिंता रहेगी, लेकिन आपकी सूझबूझ से समाधान निकल आएगा। वैवाहिक संबंधों में मधुरता रहेगी। प्रेम संबंधों में पारदर्शिता रखें, वरना गलतफहमी बढ़ सकती है। भाग्यशाली रंग- आसमानी, भाग्यशाली अंक- 1

मीन राशि- दिनचर्या व्यवस्थित रखना जरूरी है। कोई भी योजना बनाने से पहले गंभीरता से सोचें, वरना गलती हो सकती है। नकारात्मक सोच वाले लोगों की सलाह आपको लक्ष्य से भटका सकती है, इसलिए अपने विवेक पर भरोसा रखें। प्रेम संबंधों में आप खुद को भाग्यशाली महसूस करेंगे। भाग्यशाली रंग- हरा, भाग्यशाली अंक- 2

EXPERIENCE HELI TOUR WITH

Himgiri
Aviation & Tourism
SINCE 2018

3N/4D TOUR

A Unit of
दिव्य हिमगिरि

केदार-बद्री यात्रा

BY HELICOPTOR

OPENING DATES

KEDARNATH	BADRINATH
22 April, 2026	23 April, 2026

ADVANCE BOOKING STARTS **BOOK NOW**

Contact for Reservation | 8433456398, 9410353164

Email: himgiritourism@gmail.com
6 Municipal Road, Opp. Oxford School of Excellence, Dalanwala, Dehradun-248001 (UK)

R.N.I.: UTTHIN/2010/41629 | Postal Regd. UA/DO/DDN/01/2025-2027

Silkyara™

Pahad ki Mahilaon Dwara Banaya Gaya

Pure & Natural

A2 Badri Cow Ghee

A2 Beta Protein

Bilona Method

Immunity Booster

fssai 22623030001586

UDYOG AADHAR MSME UK050061483

THE DOON HIMALAYAN AGRO FOODS
Dalanwala, Dehradun
Customer Care - 7409782771

Available at

KUMAR SWEETS
Sahastradhara Road,
Near Crossing, Dehradun
7017180869

PLANET JR
Panditwadi,
Chakrata Road, Dehradun
9897477151